ISSN: 2349-6002

आदिवासी विवाह संस्कृति की पारंपरिक परिस्थिति में बदलाव

Dr. Prafula M. Gavli
Smt.P.N.R.Shah Mahila Arts and Commerce College, Palitana
doi.org/10.64643/IJIRTV12I8-191213-459

***Abstract*—अलग-अलग आदिवासी समुदायों की पारंपरिक शादी की संस्कृति में हो रहे बड़े बदलावों की जांच करता है, खासकर आधुनिक, शहरीकरण और बाहरी सांस्कृतिक असर के संदर्भ में। पारंपरिक आदिवासी शादियां, जिनकी पहचान ऐतिहासिक रूप से समुदाय के फैसले लेने, खास तरह की शादियों (जैसे, एक से ज़्यादा पति, एक से ज़्यादा पत्नी , पकड़कर शादी, सामुहिक विवाह, दहेज के बजाय दुल्हन की कीमत का चलन और घ्रर से बाहर शादी/ घर में शादी जैसी होती है , उनमें एक खास बदलाव आ रहा है। इस बदलाव के मुख्य कारणों में फॉर्मल शिक्षा की शुरुआत , बड़े पैमाने पर धर्म बदलने का असर बढ़ता शहरीकरण और ग्लोबल मीडिया जो दर्शाता हे वह शामिल होता हे। रिसर्च से पता चलता है कि कम्युनिटी रेगुलेशन से हटकर ज़्यादा व्यक्तिगत पसंद, पारंपरिक रीति-रिवाजों को आसान बनाने या बदलने, और इंटर-कास्ट शादियों और लव मैरिज जैसी प्रथाओं में बढ़ोतरी हो रही है, जिससे अक्सर सांस्कृतिक आक्षरण और बदलाव का एक मुश्किल डायनामिक बन जाता है।**

I. परिचय: आदिवासी विवाह संस्था

आदिवासी समाज में शादी एक अहम संस्था है, जो सिर्फ़ दो लोगों के बीच ही नहीं, बल्कि दो परिवारों या कुलों के बीच एक गठबंधन का काम करती है, जिससे समुदाय चलता रहता है और उसका सामाजिक-आर्थिक ढांचा बना रहता है पारंपरिक रीति-रिवाज अक्सर समाज की खास आर्थिक सच्चाइयों को दिखाते हैं, जैसे कि किन्नरों या टोडाओं में बंटी हुई ज़मीन को बचाने के लिए एक से ज़्यादा पति रखने की प्रथा। धन (कुछ मामलों में) जिसने ऐतिहासिक रूप से दहेज-आधारित परिस्थितिकी तुलना में महिलाओं को ऊंचा सामाजिक दर्जा दिया । इस पेपर का मकसद इन पारंपरिक विवाह परिस्थिति में बदलाव लाने वाले बाहरी और अंदरूनी कारणों का परिस्थितिके आधिन तरीके से विश्लेषण करना है।

II. पारंपरिक परिवेश में बदलाव के कारक

आदिवासी शादी की संस्कृति में बदलाव एक कई तरह की घटना है जो कई आपस में जुड़ी बाहरी ताकतों से चलती है:

2.1 आधुनिकीकरण और शहरीकरण का प्रभाव

मॉडर्नाइज़ेशन, जिसमें इंडस्ट्रियलाइज़ेशन, टेक्नोलॉजी में तरक्की, और बड़ी नेशनल इकॉनमी में इंटीग्रेशन शामिल है, चुनौतियाँ और मौके दोनों देता है (इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ सोशियल इम्पैक्ट, 2025)।

मैचमेकिंग क्राइटेरिया में बदलाव: परिवार की रेप्युटेशन और खानदान जैसे ट्रेडिशनल क्राइटेरिया की जगह अब एजुकेशनल क्वालिफिकेशन , करियर प्रॉस्पेक्ट्स और पर्सनल कम्पैटिबिलिटी जैसे मॉडर्न फैक्टर्स ले रहे हैं (ExploreAnthro.com, 2023)।

2.2 औपचारिक शिक्षा और व्यक्तिवाद की भूमिका

फॉर्मल एजुकेशन का फैलना, खासकर महिलाओं के बीच, बदलाव का एक बड़ा कारण है।

शादी की उम्र में बढ़ोतरी: हायर एजुकेशन की वजह से लोग अक्सर प्रोफेशनल ग्रोथ और खुद को जानने को प्राथमिकता देते हैं, जिसके कारण पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए शादी की उम्र में काफी बढ़ोतरी होती है (रिसर्चगेट , 2017)। (सोशियोलॉजी इंस्टीट्यूट, 2022)।

इंडिविजुअल चॉइस का बढ़ना: एजुकेशन इंडिविजुअल राइट्स और पर्सनल ऑटोनॉमी के बारे में अवेयरनेस बढ़ाती है। नतीजतन, पार्टनर चुनने में परिवार/कम्युनिटी के ट्रेडिशनल दबदबे को लव मैरिज की बढ़ती एक्सेप्टेंस से चुनौती मिल रही है , जो पर्सनल, रोमांटिक चॉइस की ओर एक बड़ा बदलाव है

2.3 धर्म परिवर्तन का प्रभाव

कुछ समुदायों के लिए, धर्म में बदलाव ने शादी के रीति-रिवाजों को पूरी तरह से बदल दिया है।

III. शादी के तरीकों में बदलाव का दिखना

शादी की प्रक्रिया और बनावट के अलग-अलग पहलुओं में बदलाव दिखते हैं।

पारंपरिक प्रथा	आधुनिक संदर्भ में बदलाव	प्रभाव
दुल्हन की कीमत (दूल्हे के परिवार द्वारा भुगतान की गई)	दहेज (दुल्हन के परिवार द्वारा दिया जाने वाला) की प्रथा कम हो रही है, या तेज़ी से इसकी जगह ले रही है ।	महिलाओं की सामाजिक स्थिति को रोकता है और दुल्हन के परिवार पर आर्थिक बोझ बढ़ाता है (HRDC, गुजरात यूनिवर्सिटी, 2021)।
विवाह के प्रकार (जैसे, सेवा विवाह, कब्जा द्वारा विवाह, बहुविवाह , बहुपतित्व)	गदाबास के बीच कब्जा करके शादी "शायद ही कभी देखी जाती है")	अनोखे, समुदाय-विशिष्ट विवाह रूपों में कमी (ई-मैगज़ीन ओडिशा रिव्यू, 2015)।
अनुष्ठान और समारोह	आसान बनाना/कम करना (जैसे, समय, खर्च की कमी, या आसान धार्मिक रस्मों को अपनाने की वजह से)।	कल्चरल इरोजन का खतरा ; बड़े-बड़े पारंपरिक रीति-रिवाजों से जुड़े सिंबॉलिक मतलब और सोशियो-कल्चरल वैल्यू का नुकसान।
पारिवारिक संरचना	पारंपरिक घर-आधारित सामाजिक संरचना का कमज़ोर होना, परमाणु परिवारों के लिए बढ़ती प्राथमिकता (रिसर्चगेट , 2024)।	सामूहिक ज़िम्मेदारी के बजाय व्यक्तिवाद में बढ़ोतरी।

पारंपरिक प्रथा	आधुनिक संदर्भ में बदलाव	प्रभाव
वैवाहिक स्थिरता	तलाक की दरें बढ़ रही हैं, जो समाज के सख्त नियमों में ढील और नाखुश रिश्तों को खत्म करने के लिए लोगों को ज़्यादा आज़ादी दिखाती है।	शादी को एक अटूट सामाजिक कॉन्ट्रैक्ट से पर्सनल पार्टनरशिप में बदलना (ExploreAnthro.com, 2023)।

IV. निष्कर्ष

आदिवासी समुदायों का पारंपरिक शादी का कल्चर बदलता रहता है, जो एक खास कल्चरल विरासत को बचाने और ग्लोबलाइज़्ड दुनिया की सोशियो-इकोनॉमिक सच्चाइयों के हिसाब से ढलने की दोहरी ताकतों से जूझ रहा है। जहाँ मॉडर्नाइज़ेशन और एजुकेशन महिलाओं की आज़ादी और शादी की ज़्यादा उम्र जैसे अच्छे बदलावों को बढ़ावा देते हैं, वहीं वे खास कल्चरल तरीकों के खत्म होने और कुछ मामलों में, बराबरी वाले ब्राइड प्राइस सिस्टम की जगह प्रॉब्लम वाले दहेज सिस्टम जैसी चुनौतियाँ भी लाते हैं। भविष्य की रिसर्च में कल्चरल रेजिलिएंस के लिए स्ट्रेटेजी और ऐसी पॉलिसी बनाने पर फोकस होना चाहिए जो आदिवासी पहचान का सम्मान करते हुए और उन्हें बचाते हुए सोशियो-इकोनॉमिक तरक्की में मदद करें (ज़ेनोडो , 2024)।

संदर्भ उद्धृत)

[1] भंडारी , बी. (सहपीडिया में उद्धृत) जनजातीय विवाह और लिंग संबंध ।

[2] ExploreAnthro.com. (2023). शादी के पैटर्न पर शहरीकरण का असर । [ExploreAnthro.com के लिए सोर्स URL] से लिया गया

[3] HRDC, गुजरात यूनिवर्सिटी. (2021). नागालैंड की नागा जनजातियों में शादी की रस्मों में बदलाव और निरंतरता : एक छोटी तुलना वाली चर्चा . [HRDC, गुजरात यूनिवर्सिटी के लिए सोर्स URL] से लिया गया

[4] इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ सोशल इम्पैक्ट. (2025). ट्राइब सोसाइटी पर मॉडर्नाइज़ेशन का असर . [इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ सोशल इम्पैक्ट का सोर्स URL] से लिया गया

[5] मिबांग और बेहेरा . (2007). जैसा कि HRDC, गुजरात यूनिवर्सिटी (2021) में बताया गया है।

[6] • रिसर्चगेट . (2017). भारत में शादी के इंतज़ाम और रीति-रिवाज . [रिसर्चगेट का सोर्स URL] से लिया गया

[7] • सोशियोलॉजी इंस्टिट्यूट. (2022). शहरी भारत में शादी का विकास: परंपरा और मॉडर्निटी में बैलेंस बनाना . [सोशियोलॉजी इंस्टिट्यूट का सोर्स URL] से लिया गया

[8] ज़ेनोडो . (2024). आदिवासी पहचान और संस्कृति पर मॉडर्नाइज़ेशन का असर . [ज़ेनोडो के लिए सोर्स URL] से लिया गया